Vol 6 Issue 8 May 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

प्रगतिवाद वर्ग संघर्ष का काव्य

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी , भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग ,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

प्रस्तावना :

प्रगतिवादी काव्य छायावाद की समाप्ति काल सन् 1936 ई. के आसपास से सामाजिक चेतना को लेकर निर्मित होना प्रारम्भ हुआ। यह काव्यधारा मार्क्सवादी आदर्श के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चली। प्रगतिवादी काव्य के उद्‌भव और विकास में एक और भारतीय समाज में उभरता हुआ जन संकट था तो दूसरी और रूस में मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर स्थापित साम्यवाद। राजनीति और दर्शन में जिसे साम्यवाद कहते हैं वही साहित्य में 'प्रगतिवाद' के नाम से अवतीर्ण हुआ। भारतीय बुद्धिजीवी एक और अपने समाज में उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक विसंगतियों को देख रहा था। प्रगतिवादी काव्यधारा का केन्द्र बिन्दु सर्वहारा वर्ग है। आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक दृष्टि से पीड़ित सर्वहारा वर्ग की संघर्ष स्थिति के अंकन में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। प्रगतिवादी काव्य में प्रतिबद्धता पर विचार करने से पूर्व प्रगतिवादी काव्यधारा के सन्दर्भ में कुछ विद्वानों का परिचय पाना आवश्यक है–

डॉ. नामवर सिंह – ''प्रगतिवाद का आरम्भ साहित्य में आर्थिक राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ। हिन्दुस्तान की आजादी उस समय लेखकों की प्रमुख समस्या थी। इसके साथ ही वे किसान मजदूरों की सुख सुविधा के लिए भी चिंतित हो उठे।''[1]

डॉ. नगेन्द्र – ''प्रगतिवादी कवि के वैयक्तिक जीवन की अनुभूति सामाजिक सहानुभूति में सरलतापूर्वक पर्यवसित हो गई है और दलित मानव की दयनीय स्थिति का अंकन करने में सफलता प्राप्त कर सकी। इसके साथ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रगतिवादी कविता साधारण स्वस्थ जीवन से सम्बन्ध रखने वाली होने के कारण दलित वर्ग की भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनना स्वाभाविक है।''[2]

डॉ. रामविलास शर्मा – ''प्रगतिशील साहित्य जनता की तरफदारी करने वाला साहित्य है।''[3]

प्रगतिवादी काव्य में वर्ग संघर्ष का चित्रण – प्रगतिवादी के समय में दो बड़ी शक्तियां पूंजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। श्रमिक वर्ग की दयनीय स्थिति का कारण उसकी अत्यधिक निर्धनता थी। इसी कारण वर्ग संघर्ष की चेतना अधिक तीव्र होने लगी और श्रमिक वर्ग सामाजिक चेतना की ओर बढ़ने लगा। निर्धनता और ऋण के बोझ तले तत्कालीन श्रमिक वर्ग अमानीवय स्थिति में था। इस स्थिति का प्रभाव प्रगतिवादी कवियों पर पड़ा। प्रगतिवादी काव्यध्यारा के प्रमुख कवियों में सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नरेन्द्र शर्मा, रांगेय–राघव। प्रगतिवादी काव्य का प्रमुख दृष्टि केन्द्र श्रमिक एवं कृषक थे। ये सर्वहारा स्थिति में थे। शोषित उत्पीड़ित वर्गों के प्रति अशेष ममता और सहानुभूति प्रगतिशील काव्यधारा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है। अपने समूचे इतिहास में पहली बार कविता ने किसान मजदूर के मटमैले अभावग्रस्त और विषाद भरे जीवन में उनके उद्धार–उपायों से लैस होकर पूरी पक्षधरता के साथ प्रवेश किया मार्क्सवादी दर्शन में कृषक, शोषित, पीड़ित, मजदूर वर्ग का विशिष्ट स्थान है। हिन्दी की प्रगतिवादी कविता में किसानों, मजदूरों और श्रमिक वर्ग के पक्ष में प्रगतिवादी कवियों ने किस प्रकार आवाज उठाई है उसका वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के माध्यम से

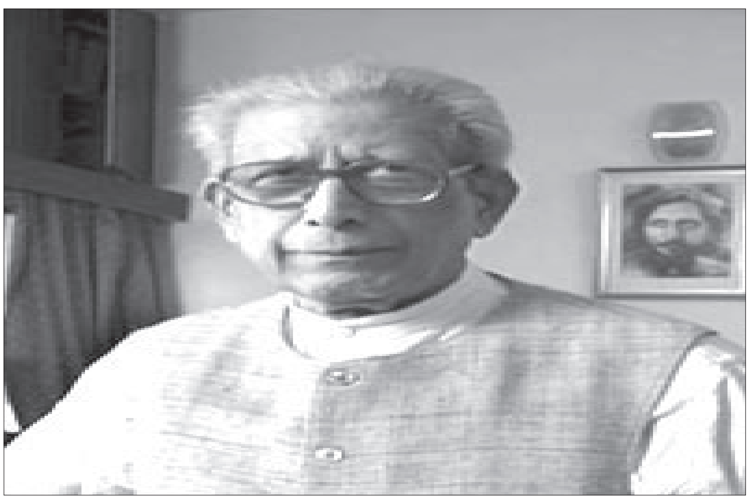

दर्शाया गया है–

किसान वर्ग का चित्रण – प्रगतिवादी कवियों ने किसान के शोषण, दयनीय अवस्था एवं पीड़ाओं का चित्रण अपने काव्यों में किया है। प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल तो साहित्य ही किसानों के पक्ष में लिखने के लिए कहते हैं–

वह वही लिखे जो कि उसे लिखना है
ताकि वह मजदूर की, किसान की हिमायत करे
जालिमों के साथ नहीं कोई रियायत करे...।[4]

किसान पूंजी पर आधारित कृषि अवस्था में अपना पसीना बहाकर श्रम करते हैं किन्तु उन्हें अपने श्रम का पारिश्रमिक बहुत कम मिलता था किसान स्वयं अन्न उत्पन्न करता है पर अनाज से महाजन या जमींदार का घर भर जाता है वह स्वयं भूखा रह जाता है। रांगेय राघव लिखते हैं–

दे रहा है अन्न, भूखा खेतिहर वह आज
जो बदलता विश्व, भूखा है वही मजदूर...।[5]

एक और किसान जीवन भर कड़ा परिश्रम करते हैं तो दूसरी और अपने आर्थिक बोझ को कम करने के लिए उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह आजीवन उस ऋण को नहीं चुका पाता। अतः किसान के मरने के बाद उसका पुत्र उसकी दरिद्रता को अपनी पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाता है–

जब बाप मर गया
तब यह पाया भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलबा, टूटी खटिया, कुछ हाथभूमि, वहकी परती।[6]

मजदूर वर्ग का चित्रण – हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों ने मजदूर वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन अपने काव्य में किया है। श्री केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी 'मजदूर' कविता में तथा महेन्द्र भटनागर ने अपनी 'मिल मजदूर' कविता में मजदूरों की निर्धनता तथा उनके कठोर परिश्रम का वर्णन किया है। शिव मंगल सिंह सुमन मजदूरों का जीवन कंकड़ पत्थर से भी बदतर मानते हैं, वे लिखते हैं–

पर मैंने कल पथ पर देखी पद दलित मानवों की टोली
थी जिनकी आह कराहों में मेरी परवशता की बोली
उनकी भी हाहाकारों पर देता था कोई ध्यान नहीं
अपने सूखे जर्जर तन में लगते थे मेरे हम जोली
जीवन में पहले पहल मुझे अपने पर कुछ गर्व हुआ
मैं जड़ होकर भी इन चेतन नर कंकालों से बढ़कर हूं
मैं पथ का कंकड़ पत्थर हूँ।[7]

भिखारी का चित्रण – हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों ने अपनी प्रगतिशील कविताओं में भिखारी वर्ग की भूखा दयनीय स्थिति समाज की उपेक्षा आदि का बखूबी वर्णन किया है। श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला अपनी 'भिक्षुक' कविता में भिखारी का हृदय विपारक चित्र प्रस्तुत किया है–

''वह आता –दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता
पेट पीठ मिलकर दोतों हैं एक
चल रहा लकुटिया हेक
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता।''[8]

श्री सुमित्रानन्द पंत ने 'वह बुड्ढा' शीर्षक कविता में बुड्ढे भिखारी का चित्र खींचा है–

''खड़ा द्वार पर लाठी टेके, वह जीवन का बूढ़ा पंजर,
चिमटी उसकी सिकुड़ी चमड़ी, हिलती हड्डी के ढांचे पर।''[9]

सर्वहारा वर्ग का चित्रण – हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों ने सर्वहारा वर्ग की दयनीय स्थिति का वर्णन अपने काव्य में किया है। उस समय में सर्वहारा वर्ग को अन्न, वस्त्र एवं आवास जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। रांगेय राघव ऐसी करुणामय स्थिति को देखकर पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति क्रोध प्रकट करता है–

इधर मरते हैं करोड़ों
घर नहीं, मन खोया...
पूंजीवाद की इस नंगी छांह में
आप.. नंगा और भूखा देश। [10]

सर्वहारा वर्ग भूख से बेचैन होकर मर रहा। ऐसे में बाढ़ आ जाए तो उसकी स्थिति और दयनीय हो जाती है। अन्न के अभाव में मंहगाई बढ़ने लग जाती है और वस्तुओं की कीमतें दिन–प्रतिदिन बढ़ जाती हैं–

हम हो गए हैं बौने और कीमतें हो गई हैं सुरसा
वस्तु हो गई है पहुंच से परे। [11]

इस प्रकार सर्वहारा वर्ग का जीवन नरक के समान हो जाता है। विवश होकर उसे भीख मांगनी पड़ती है–

वह आता
दो टूक कलेजे के करता
पधताता पथ पर आता..। [12]

सर्वहारा वर्ग के आर्थिक अभाव से ग्रस्त जीवन से संघर्ष करते हुए नागार्जुन अपनी व्यथा व्यक्त करते हैं–

पैदा हुआ था मैं
दीन हीन अपठित कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का असाव ठेठ बचपन से। [13]

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी का आधार किसान, मजदूर, भिखारी, शोषित वर्ग, सर्वहारा वर्ग की दयनीय अवस्था का चित्रण बड़ी संवेदनात्मक तीव्रता से किया है। उस जन समाज शोषक और शोषित दो वर्गो। में बंटा हुआ था और समाज का शोषित वर्ग को लेकर चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया था। भारतीय समाज के केन्द्र बिन्दु मजदूर और किसान प्रगतिवादी हिन्दी कविता के केन्द्र बिन्दु बने। प्रगतिवादी कवियों ने पूंजीवाद और साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए सर्वहारा वर्ग को जागृत कर क्रांति की ओर अग्रसर करने का प्राथमिक और आधारभूत प्रयास किया है।

सन्दर्भ –

1.आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां, नामवर सिंह, इलाहाबाद लोक भारतीय प्रकाश, संस्करण 1977, पृ. 87
2.आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां, डॉ. नगेन्द्र, गौतम बुक डिपो, दिल्ली संस्करण 1951, पृ. 102
3.प्रगतिशील हिन्दी कविता, डॉ. दुर्गा प्रसाद झाला, पृ. 62
4.फूल नहीं रंग बोलते हैं, केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 1965, पृ. 80
5.पिघलते पत्थर, रांगेय राघव, पृ. 73
6.युग की गंगा, केदारनाथ अग्रवाल, हिन्दी ज्ञान मंदिर, लि. बम्बई, संस्करण 1949, पृ. 50–51
7.प्रलय–सृजन, श्री शिव मंगल सिंह सुमन, पृ. 20
8.परिमल, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पृ. 133
9.ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, पृ. 29–30
10.पिघलते पत्थर, रांगेय राघव, पृ. 186
11.फूल नहीं रंग बोलते हैं, केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2011, पृ. 186
12.भिक्षुक (परिमल), सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1978, पृ. 133
13.युगधारा, नागार्जुन, जनसेवा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1953, पृ. 12

मनजीत कौर
पीएच.डी. शोधार्थी , भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशवारी विभाग ,पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ Directory Of Research Journal Indexing
- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com